University of Lucknow

Press Note 22nd May 2020

An ***International e Symposium on International Day for Biological Diversity*** on theme Our Solutions are in Nature on 22nd May 2020 organized by ENVIS resource partner, Institute of Wildlife Sciences, University of Lucknow in collaboration with UP State Biodiversity Board, Biodiversity and wildlife conservation lab, Department of Zoology, University of Lucknow, TSA India, Butterfly Research Centre, Bhimtal, ONGC Pvt Ltd. and MoEF&CC India.

On this occasion Hon'ble Governor of Uttar Pradesh and Chancellor of University of Lucknow Smt. Anandiben Patel attended the following programs via e-conferencing at the University of Lucknow:

1. Release of the 1st ever bio-diversity index of Lucknow

2. Inaugural of international e-symposia organized on the occasion of International Day of Biological Diversity

Opening of e Symposium was done with the welcome address by Prof Alok Kumar Rai, Hon'ble Vice Chancellor, University of Lucknow in which he emphasized on the work done by the University in the last 5 months, and specially during the lock-down period. He Spoke that University of Lucknow is going to become the first University in the country to assess its carbon foot-print and the first University in the country to calculate a city's bio-diversity index and many more works done by the university related to students welfare and university.

Hon'ble Her Excellency Chancellor Madam released the 1st ever bio-diversity index of Lucknow and then inaugurated the international e-symposia 'Our Solutions are in Nature' and delivered her inaugural lecture. HE said that India is one of the 70 nations with the richest biodiversity, in fact we contribute 7% to the bio-diversity of the world. She also said that both India's past and its culture understand the importance of bio-diversity. So much that that the atharvaved talks about several plants and herbs essential for human health and survival. She said that the international symposia's theme 'Our solutions are in nature' is extremely relevant and it is our duty to do whatever we can do help improve our biological diversity—e.g. planting as many trees as possible, as many herbs as possible. She welcomed all the speakers of the symposia and wished everyone the best. In the end, Her Excellency called out to the researchers present in the event to think how we as a University, as a city and as the public contribute to a greener city and maybe work towards achieving that, and measuring what changes have happened due to these efforts in the next year.

University of Lucknow

She also floated the idea that a similar bio-diversity index of the Raj Bhavan may be made so that it can become clear what the Governor House can do to contribute towards a greener world.

Speakers invited from US, Japan, France, Brazil, UAE etc. to deliver lectures at the international esymposia from several countries were also present during the inaugural function. Our first expert Dr. Shakeel Ahmad, Scientist from Environment Agency, Abudhabi, U.A.E delivered a talk on terrestrial biodiversity assessment and monitoring techniques in conservation biology and talk about the conservation case studies in UAE and he also discussed about the wildlife monitoring using camera traps, its utility and limits. Prof. Prof. Sylvia Turrell from University of Lille, France , Dr James Cheeseman, Gaussian INC, U.S.A, Prof. Yukihiro Ozaki, Kwansei Gakuin University, Japan and Prof. Javier Ellena, Brazil remarked about the biodiversity, its importance and threats challenges in their talk. Prof. Prof. Reuven Yosef Ben Guren University, Eilate Campus, Israel delivered his talk on Win-Win Ecology and ecological parameters of assessment. Dr. Ryno Kemp, Research Manager VULRPO(Vulture Programme) South Africa discussed the status, distribution and scenario of Vulture Conservation in South Africa. Dr. Kerry Kriger, Save the Frogs! Founder/Executive Director, briefed in details about the amphibians, vocal identification methods and conservation of amphibians through community participation across the World in his talk.

Approximately 250 participants were participated from different part of world like USA, UAE, China, Brazil, Japan, France and country like Gujarat, Bihar, Uttarakhand, Karnataka, West Bengal, Haryana, Rajasthan, Jammu and Kashmir, Punjab, Odisa, Maharastra, Uttar Pradesh, Tamilnadu, Kerala and Jharkhand etc.

The International e symposium concludes with very important message that today in scenario of Covid-19, special emphasis given on biodiversity & its conservation, India is known for its floral and faunal diversity as well as find the way for conservation of biodiversity at Global Level. The e symposia mainly focused on analyze global terrestrial, freshwater, and marine biodiversity scenarios using a range of measures including extinctions, changes in species abundance, habitat loss, and distribution shifts, as well as comparing model projections to observations Scenarios Globally. It’s time to join hands and works together in collaboration for conservation of biodiversity and also should be emphasis on participation of local community in conservation.

University of Lucknow | Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय | शताब्दी वर्ष

University of Lucknow

Some Glimpses of International e- Symposium

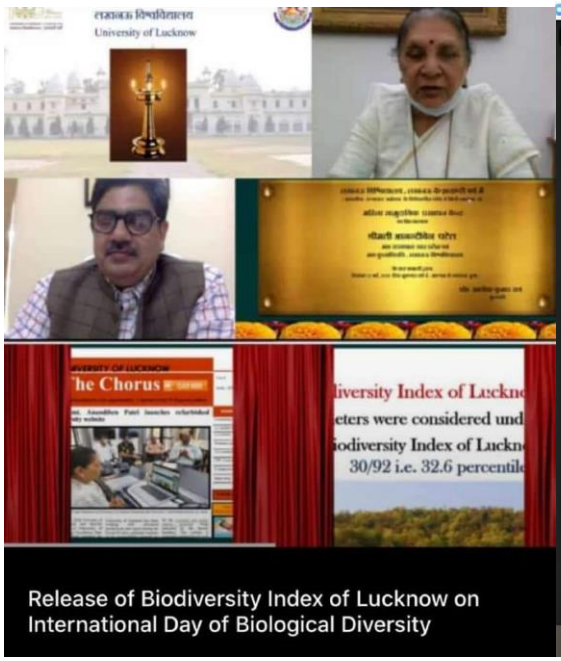

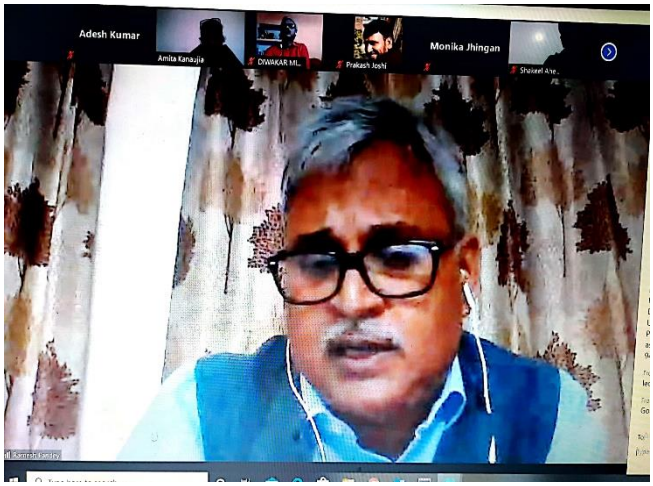

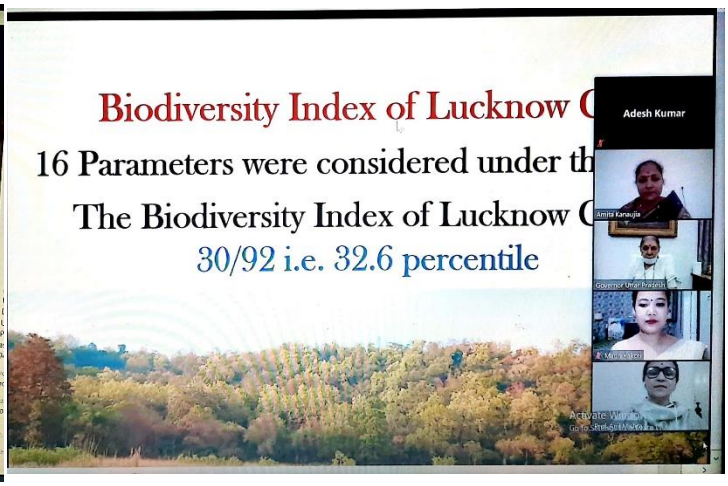

University of Lucknow | Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय | शताब्दी वर्ष

University of Lucknow

Media Coverage

जैव विविधता से पर्यावरण सुधरेगा:राज्यपाल

राज्य मुख्यालय | प्रमुख संवाददाता

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि हम सबको मिलकर जैव विविधता के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए और अधिक से अधिक वन, बगीचे, औषधीय पौधों को लगाना चाहिए। इससे हमारे आसपास के जैव विविधता में बढ़ोत्तरी होगी और पर्यावरण की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

वह शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर आयोजित ई-संगोष्ठी में बोल रही थीं। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय एवं जैव विविधता बोर्ड उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस ई-संगोष्ठी का राजभवन से ही उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि जैव विविधता से हमारी पारिस्थितिकीय तंत्र का निर्माण होता है, जो एक-दूसरे के जीवन यापन में सहायक होते हैं। जैव विविधता पृथ्वी पर पाई जाने वाली जीवों की विभिन्न प्रजातियों को कहा जाता है।

शुक्रवार को जैव विविधता पर गोष्ठी को ऑनलाइन संबोधित करतीं राज्यपाल आनंदी बेन।

भारत अपनी जैव विविधता के लिए विश्व विख्यात है। भारत 17 उच्चकोटि के जैव विविधता वाले देशों में से एक है तथा पूरे विश्व की जैव विविधता में भारत की 7 प्रतिशत भागीदारी है। राज्यपाल ने कहा कि भारत की भौगोलिक स्थिति देशवासियों को विभिन्न प्रकार के मौसम प्रदान करती है। भारत में 17 कृषि जलवायु जोन हैं, जिनसे अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

ई-शिलान्यास किया

इससे पहले राज्यपाल ने राजभवन से ही लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में महिला सामुदायिक प्रसाधन केन्द्र का ई-शिलान्यास किया। साथ ही लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित न्यूजलेटर (द कोरस) तथा लखनऊ शहर के जैव विविधता सूचकांक (इण्डेक्स) का लोकार्पण भी किया। इस मौके पर लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय सहित आबूधाबी, इजराइल, साउथ अफ्रीका, यूएसए, फ्रांस, जापान और ब्राजील जैसे 8 देशों के विषय विशेषज्ञ भी आनलाइन मौजूद थे।

अपनी जैव विविधता के लिए विश्व विख्यात है भारत : आनंदीबेन पटेल

लविवि व जैव विविधता बोर्ड की ओर से आयोजित ई-संगोष्ठी का किया उद्घाटन

अमृत विचार लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने शुक्रवार को कहा कि जैव विविधता से हमारी पारिस्थितिकीय तंत्र का निर्माण होता है, जो एक-दूसरे के जीवन यापन में सहायक होते हैं।

श्रीमती पटेल ने शुक्रवार राजभवन से अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर लखनऊ विश्वविद्यालय एवं जैव विविधता बोर्ड उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ई-संगोष्ठी 'हमारा समाधान प्रकृति में हैं' का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि जैव विविधता पृथ्वी पर पाई जाने वाली जीवों की विभिन्न प्रजातियों को कहा जाता है। भारत अपनी जैव विविधता के लिए विश्व विख्यात है। उन्होंने कहा कि भारत 17 उच्चकोटि के जैव विविधता वाले देशों में से एक है तथा पूरे विश्व की जैव विविधता में भारत की 7 प्रतिशत भागीदारी है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत की भौगोलिक स्थिति देशवासियों को विभिन्न प्रकार के मौसम प्रदान करती है। भारत में 17 कृषि जलवायु जोन हैं, जिनसे अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। देश के जंगलों में विभिन्न प्रकार के नभचर, थलचर एवं उभयचर प्रवास करते हैं। इनमें रहने वाले पक्षी, कीट एवं जीव जैव विविधता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा देश वैदिक काल से ही अपनी औषधीय विविधता के लिए प्रसिद्ध रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कोविड-19 से बचाव के लिए क्लोरोक्विन दवा का प्रयोग कई देशों द्वारा किया जा रहा है। इसका सबसे ज्यादा उत्पादन एवं निर्यात भारत द्वारा पूरे विश्व में किया जा रहा है। इस दवा का प्रयोग मलेरिया बीमारी के लिए होता है। यह चिनकोना पेड़ से प्राप्त होता है। इससे पहले उन्होंने राजभवन से ही लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में महिला सामुदायिक प्रसाधन केन्द्र का ई-शिलान्यास किया और विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित न्यूजलेटर (द कोरस) तथा लखनऊ शहर के जैव विविधता सूचकांक (इण्डेक्स) का लोकार्पण भी किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 आलोक कुमार राय सहित आबूधाबी, इस्राइल, साउथ अफ्रीका, यूएसए, फ्रांस, जापान और ब्राजील जैसे आठ देशों के विषय विशेषज्ञ भी ऑनलाइन उपस्थित थे।

'प्रकृति में ही है हर समस्या का समाधान'

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रवास से पहला बायोडायवर्सिटी इंडेक्स जारी, राज्यपाल ने जैव विविधता का सूचकांक तैयार करने को कहा

जागरण लखनऊ : भारत का इतिहास और संस्कृति दोनों जैव विविधता के महत्व को समझाते रहे हैं। यहां तक कि अथर्ववेद में विभिन्न औषधियों का उल्लेख भी है। हमें जैव विविधता को बढ़ावा देने के लिए अधिक से अधिक पेड़ और औषधियां लगाना चाहिए, यह कहना था राज्यपाल/कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल का।

राज्यपाल आनंदी बेन

शुक्रवार को लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ई-सिम्पोसिया का आयोजन किया गया। इस अवसर मुख्यअतिथि कुलाधिपति आनंदीबेन ने विश्वविद्यालय के दोनों परिसरों में महिला सामुदायिक प्रसाधन केंद्र का शिलान्यास, विश्वविद्यालय के न्यूजलेटर 'द कोरस' के इंटरैक्टिव स्पेशल कोविड-19 अंक का विमोचन, लखनऊ का सबसे पहला बायोडायवर्सिटी इंडेक्स जारी किया। राज्यपाल ने लविवि से राजभवन के जैव विविधता का भी एक सूचकांक तैयार करने के लिए कहा। साथ ही यह भी बताने के लिए कहा कि राजभवन में क्या करने की जरूरत है, ताकि प्रकृति में सुधार लाया जा सके।

सीबीएस प्रोग्राम किया तैयार : लखनऊ विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि विवि ने दस फीचर्स वाला देश का पहला सीबीसीएस प्रोग्राम तैयार किया है। साथ ही अपना कार्बन-फुट प्रिंट मापने व शहर के बायोडायवर्सिटी इंडेक्स की गणना करने वाला पहला विवि बना है। विश्वविद्यालय ने अपना पीएचडी आर्डिनेंस बना चुका है और अगले अकादमिक कार्उसिल की मीटिंग होते ही यह लागू किया जाएगा। पुअर ब्रॉयिज फंड का नाम बदलकर स्टूडेंट वेलफेयर फंड किया गया है।

सूचकांक में सुधार की जरूरत : कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय कंडक्ट इन क्लासेज, कनेक्ट विद स्टूडेंटस और कंटेंट क्रिएशन मॉडल पर ई-कक्षाएं चला रहा है। इंस्टीट्यूट ऑफ वाइल्ड लाइफ सांइस की निदेशक एवं जीव विज्ञान विभाग की प्रो. अमिता कनौजिया ने बताया कि लखनऊ का बॉयोडायवर्सिटी इंडेक्स 26 में से 16 पैरामीटर्स के आधार पर निकाला गया है। लखनऊ का सूचकांक 92 में 30 है। इसमें और सुधार की जरूरत है। सिम्पोसिया में जापान, दक्षिण अफ्रीका, युएई समेत विभिन्न देशों से वक्ता शामिल हुए।